कोटा में आयोजित सिंधी समाज के कार्यक्रम में माननीय अध्यक्ष जी का सम्बोधन

कोटा की धरती का बड़ा सौभाग्य है कि आज इस धरती पर जिन्होंने मानव सेवा ही अपना धर्म बना रखा है, मानव सेवा के कल्याण के लिए, समाज के हर दुख को अपना दुख, समाज की पीड़ा को अपनी पीड़ा समझकर किस तरीके से हम मानव कल्याण कर सकते हैं, इसके लिए आज प्रेम प्रकाश आश्रम के मंडलाचार्य, परम पूज्य सद्गुरु स्वामी भगत प्रकाश जी को मैं शत्-शत् नमन करता हूं।

परम पूज्य भगत प्रकाश जी ने दुनिया की सबसे पुरानी सभ्यताओं में से एक सिंधी सभ्यता को आगे बढ़ाकर सम्पूर्ण देश के अंदर व्यक्ति के निर्माण के साथ, उसको अच्छे संस्कार, अच्छे विचार दिए हैं। हमारी प्राचीनतम संस्कृति के माध्यम से समाज का कल्याण और लोगों की जिंदगी को बेहतर करना, उसमें उल्लास लाना, इसके लिए वे देश में काम कर रहे हैं। देश के बाहर भी मुझे कई लोग मिले जिन्होंने कहा कि हम परम पूज्य स्वामी भगत प्रकाश जी के अनुसरण और बताए हुए मार्ग पर चलकर सेवा का पुनीत कार्य कर रहे हैं।

आज पूरे देश में जहां भी स्वामी जी के आश्रम हैं, वहां सनातन संस्कृति, धर्म, हमारे अध्यात्म और उसके ज्ञान के प्रकाश से लोगों को जीवन की राह बताने का काम परम पूज्य स्वामी जी कर रहे हैं। संतों के पैर जिस धरती पर पड़ते हैं, उस धरती से एक आध्यात्मिक ऊर्जा उत्पन्न होती है जो व्यक्ति के अंदर आंतरिक ऊर्जा को उत्पन्न करने का काम करती है, ताकि

वह समाज कल्याण का काम कर सके। उन्होंने दो शब्दों के अंदर जीवन का सार बता दिया कि हमें मनुष्य जीवन मिला है और मनुष्य जीवन से सर्वश्रेष्ठ जीवन नहीं हो सकता है। उस मनुष्य जीवन को हम झूले लाल भगवान की कृपा से, उनके आशीर्वाद से मानव की सेवा में अपने आपको समर्पित करते हैं। मुझे आज खुशी है कि भारत में जहां भी सिंधी समाज का व्यक्ति रहता है, वह मानव सेवा के पुण्य का काम कर रहा है।

वर्ष 1947 में देश आजादी के समय हजारों लोगों को उस समय के अत्याचार के कारण अपनी भूमि छोड़नी पड़ी। अपनी सम्पदा-सम्पत्ति छोड़नी पड़ी, लेकिन उन्होंने अपने संस्कार और संस्कृति को नहीं छोड़ा। भूखों को भोजन देने के लिए भंडारा शुरू किया तो सबसे पहले सिंधी समाज ने शुरू किया। प्याऊ सबसे पहले शुरू किया तो सिंधी समाज ने किया। दूर से आने वाले राहगीरों के लिए ठहरने की व्यवस्था करने के लिए धर्मशाला बनाई तो सिंधी समाज ने सबसे ज्यादा बनाई और स्वामी जी ने तो देश के अलग-अलग हिस्सों में बनाई। जयपुर में बहुत पुराना प्रेम प्रकाश आश्रम है, जहां हजारों लोग आज भी ठहरते हैं। जहां 24 घंटे लोगों को भोजन और प्रसाद मिलता है।

मैं दंग रह गया, जब मैं सूरीनाम गया। जहां मुझे लगता था कि सिंधी समाज का व्यक्ति नहीं होगा। उस सूरीनाम के अंदर मैंने कृपलानी भवन देखा तो मेरी उनसे मिलने की इच्छा हुई क्योंकि सूरीनाम कंट्री भारत से बहुत दूरी पर है। वहां मैंने पूछा कि आप क्या करते हैं तो उन्होंने बताया कि विभाजन

के बाद हम सिंगापुर आए और आगे आते-आते सूरीनाम आ गए। सूरीनाम में भी यदि अध्यात्म, धर्म, संस्कृति और संस्कार के माध्यम से मानवीय सेवा का काम कोई कर रहा है तो कृपलानी परिवार कर रहा है। मैक्सिको के दूतावास में मुझे लोग मिले। कई सिंधी परिवार थे जो सिंगापुर से छोड़कर मैक्सिको में आकर बस गए, लेकिन वहां भी उन्होंने अपनी संस्कृति और सभ्यता को जीवंत रखा। मुझे वहां की एम्बेसी के एम्बेसडर ने बताया कि यहां कोरोना के समय पीड़ित मानव की सेवा का किसी ने काम किया, तो सिंधी समाज के लोगों ने प्रमुखता से किया। दुबई में तो बहुत बड़ी संख्या है। कितने कठिन समय में वहाँ गए थे, जब लोग कहते थे कि पीने का पानी नहीं होता था। वहां के शेख ने भी सिंधी समाज के व्यक्ति को सबसे बड़ी उपाधि दी। चाहे किसी भी देश में चले जाएं, जहां भी सिंधी समाज का व्यक्ति मिलेगा, अपनी कड़ी मेहनत, परिश्रम के आधार पर उसने धन अर्जित किया है और वह धन समाज के लिए समर्पित किया है। यही हमारी संस्कृति और संस्कार हैं।

मैं कोटा में भी देखता हूँ, चाहे अन्न भंडार हो, चाहे प्याऊ हो, चाहे अस्पताल हो, चाहे शिक्षा का मंदिर हो, एक पुरुषार्थ समाज, एक कठिन परिश्रम करने वाला समाज जो सब कुछ छोड़कर यहां आया था, लेकिन अपना कठिन परिश्रम, अपना पुरुषार्थ और काम करने की शक्ति साथ लेकर आया। इन्होंने सामाजिक, आर्थिक क्षेत्र में व्यापक परिवर्तन किया। भारत के व्यापार उद्योग को किस तरह से एक नई दिशा दी, एक प्रतिस्पर्धा का बाजार

दिया कि उपभोक्ता को सस्ता, टिकाऊ माल मिले, इसके लिए बाजार को नई दिशा देने का काम किया। उन दूर-दराज के इलाकों में जहां किलोमीटर दूर लोग सामान खरीदने के लिए आते थे, जब मैं माइन्स के इलाके में जाता था तो पचास किलोमीटर तक दुकान नहीं होती थी, वहां भी सिंधी समाज का व्यक्ति अपनी साइकिल पर सामान बेचने का काम करता था। ऐसा कठिन परिश्रम करने वाला सिंधी समाज है।

ऐसे कठिन परिश्रम करने वाले समाज पर आप जैसे संतों का आशीर्वाद तथा भगवान झूले लाल की कृपा बनी रही है। आज आप यहां पधारे, आपका अभिनंदन। यह धरती वह धरती है, जिस धरती पर संत मिलते हैं। संतों के पैरों से ही, संतों की वाणी से ही व्यक्ति के जीवन में परिवर्तन आता है।

भौतिक संसाधन कितने भी हो जाएं, भौतिक सुख से व्यक्ति सुखी नहीं हो सकता है। विश्व के ज्यादातर देश भौतिक सुखों की तरफ गए, लेकिन जब शांति के लिए गए तो भारत में ही शांति प्राप्त हुई। जो आध्यात्मिक शांति है, वह दुनिया में कहीं नहीं है। हमारी आध्यात्मिक शांति, हमारी आध्यात्मिक ऊर्जा हमें हमेशा मानवीय सेवा और पुण्य करने के लिए प्रेरित करती रहती है। मैं जब हरिद्वार गया, तो वहां के विधायक, वहां के अध्यक्ष, वहां के मंत्री ने कहा कि यदि कोई सबसे ज्यादा सेवा करने का काम करते हैं तो प्रेम प्रकाश आश्रम के अमरापुर आश्रम के लोग करते हैं। एक अच्छा घाट बनाया। एक घाट पहले भी बनाया और एक घाट का निर्माण करने जा रहे हैं। धर्मशाला का निर्माण करने जा रहे हैं। शिमला जैसी जगह पर भी धर्मशाला के निर्माण के

लिए उन्होंने बहुत कोशिश की। मैंने भी मुख्य मंत्री जी से कहा कि यह पुण्य का काम करने वाले लोग हैं और यह धर्मशाला बनेगी तो केवल सिंधी समाज के लिए बनेगी।

जितने भी स्थान यहां पर हैं, उन सभी स्थानों पर सर्वसमाज के लोगों को सिंधी समाज इसी तरह से सेवा देता रहे। भगवान झूलेलाल की कृपा हम पर बनी रहे। समाज के अंतिम व्यक्ति के जीवन में बदलाव करने की जिम्मेदारी हमारी है। उसके दुख और पीड़ा को दूर कर किस तरीके से हम मुस्कुराहट पैदा कर सकते हैं, इसका प्रयास हम करें। दीपावली का यह पर्व संकल्प का पर्व है। मुझे आशा है कि संतों का आशीर्वाद आज हमें मिलेगा और संतों के आशीर्वाद के माध्यम से ही हमें नए कार्य करने की ऊर्जा मिलती है। मैं पुन: इस धरती पर पधारे संतों को प्रणाम करता हूं। आपका प्यार, स्नेह और आशीर्वाद मुझे इसी तरह से मिलता रहे और आप इसी तरह से कोटा की धरती पर आते रहें। आप सभी को बहुत-बहुत धन्यवाद ।